भारति जय-विजय करे

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

भारति जय-विजय करे !
कनक-शस्य-कमल धरे !

लंका पदतल-शतदल
गर्जितोर्मि सागर-जल,
धोता शुचि चरण युगल
स्तव कर बहु-अर्थ भरे !

तरु-तृण-वन-लता वसन
अंचल में खचित सुमन,
गंगा-ज्योतिर्जल-कण
धवल धार-हार गले !

मुकुट शुभ्र हिम-तुषार
प्राण-प्रणव-ओंकार,
ध्वनित दिशाएँ उदार
शतमुख-शतरव-मुखरे !

शब्द–अर्थ

भारती – सरस्वती, भारती जय–विजय करें ! – विजय दिलानेवाली भारती, कनक–शस्य–कमल–धरे – सुनहली फसल रूपी कमल को धारण करनेवाली, पदतल – पैरों के नीचे, शतदल – कमल, गर्जितोर्मि – गर्जन करने वाली लहरें, शुचि – पवित्र, स्तव– स्तुति, वन्दना, वसन–वस्त्र, बहु अर्थ भरे– अनेक अर्थों से युक्त, अंचल– आँचल, खचित सुमन – फूलों से जड़ा हुआ, गंगा ज्योतिर्जल–कण– गंगा के चमकते जलकण, धवल– सफेद, हिम तुषार– बर्फ, हिमालय, प्रणव – ओऽम्, शतरव–सैकड़ों आवाजें, मुखरे– मुखरित करने वाली ।

भावबोध और विचार :

(क) मौखिक :–

(i) भारती के चरणों को कौन धोता है ?

(ii) भारत का मुकुट किसे कहा गया है ?

(ख) लिखित :–

(i) कविता में भारत माता के चरण–युगल को धोनेवाले सागर की स्तुति में क्या अर्थ छिपा है ?

(ii) गंगा नदी को भारत माता के गले का हार क्यों कहा गया ?

(iii) कवि ने भारत माता के वस्त्राभूषण के विषय में क्या उल्लेख किया है ?

अनुभव विस्तार :–

(i) इस कविता को कक्षा में आवृत्ति कीजिए ।

(ii) भारत माता का चित्र बनाकर कक्षा में टाँग दीजिए ।

(iii) भारत–वंदना से संबंधित कुछ कविता छाँटिए और उन्हें कक्षा में पढ़कर सुनाइए ।

भाषाबोध : –

(i) निम्नलिखित पंक्तियों को पूरा कीजिए :

(क) लंका पदतल ..... ।

..... सागर जल,

(ख) गंगा ..... – कण

धवल ..... गले ।

(ग) ..... हिम–तुषार

प्राण–प्रणव– .....

(घ) तरु–तृण–वन–लता.....

.....में खचित सुमन ।

(ii) इन शब्दों के अर्थ लिखिए :

भारती –	चरण–
कनक –	वरन –
शतदल –	सुमन –
स्तव –	धवल –
शुचि –	प्रणव –

(iii) **विलोम शब्द लिखिए :**

विजय ..... अर्थ ..... उदार .....

(iv) **इन शब्दों के दो–दो पर्यायवाची शब्द लिखिए :**

कमल ..... वन .....

सागर ..... वसन .....

जल ..... सुमन .....

चरण ..... मुकुट .....

तरु ..... हिम .....